शोध परिधि ---------- ISSN-2349-9575

साहित्य,कला,संस्कृति,मानविकी एवं समाज विज्ञान की
द्विभाषिक षट्मासिक राष्ट्रीय शोध पत्रिका

प्रवासी साहित्य में हिन्दी : एक दृष्टि

–डॉ जीत सिंह आनन्द
असि० प्रो०, हिन्दी विभाग
कु० मायावती राजकीय
महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बादलपुर(गौतमबुद्धनगर)
–डॉ मंजू चौहान
स.प्रो., हिन्दी विभाग
देवता महाविद्यालय,
मोरना, बिजनौर

शोध–सारांश

आज हिन्दी के मानक रूप के प्रति सजग रहना होगा। हिन्दी की जिंदादिली है कि वह एक ठहरे पानी का सरोवर नहीं है वरन् कुछ अनवरत बहती धारा है। उसमें बहुत सी भाषाओं की विशेषताएँ या स्वभाव समा जाते हैं और वह और भी समृद्ध होती जा रही है। आप्रवासी देशों को विश्वविद्यालय स्तर पर शोधार्थी भाषायी उपलब्धि के मानक रूप की ओर ध्यान देना होगा।

प्रवासी साहित्य हिन्दी जगत में एक नयी एवं सार्थक चेतना है जिस प्रकार नारी विमर्श, दलित विमर्श और आदि विमर्श है उसी प्रकार प्रवासी विमर्श एक अतिश्योक्ति विधा नहीं है। वैश्वीकरण पटल पर कोई भी विमर्श बिना खेमेबाजी से विरक्त न हो सका। एक साहित्यकार दूसरे साहित्य या विमर्श को कमतर दृष्टि से देखता है।

प्रश्न यह है कि प्रवासी कौन तथा प्रवासी साहित्य कैसा है? प्रवास का साधारण अर्थ है निवास करना अर्थात भारतीय लोग दूसरे देशों में रह रहे हैं, वे सभी प्रवासी की श्रेणी में आते हैं। जो साहित्यकार मूल निवासी भारत के हैं तथा दूसरे देशों में जाकर अपने देश की संस्कृति एवं रीति रिवाज, मानक मूल्यों को अपनी लेखनी से संवार रहे हैं, प्रवासी साहित्य कहा जाता है।

अर्चना मेन्यूली, तेजेन्द्र शर्मा, सुषमा बेदी, सुधा ढींगड़ा, इला प्रसाद, रेनू गुप्ता, कृष्णा विहारी, गौतम सचदेव, सुरेश शुक्ला, ऊषा राने, पूर्णिमा वर्मन, अंजना संधीर, ऊषा प्रियवंदा, वंदना सक्सेना, राजलुम्बा, सुदर्शन, पुष्पा अवस्थी ऐसे साहित्यकार हैं जो विदेशों में रहकर हिन्दी साहित्य का सर्जन कर रहे हैं। लेकिन ये ऐसे साहित्यिक सर्जन है जैसे कोई हिन्दुस्तान के किसी गांव